IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शैलेश मटियानी कृत पहाड़ी परिवेश की कहानियों में नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण

डॉ रंजीत कौर

हिंदी विभाग

एम एस एम कॉलेज बलसुआ (पंजाब)

संक्षेपः शैलेश मटियानी जी पहाड़ों के रहने वाले लेखक हैं। उनका शैशव जिला अल्मोड़ा के बाड़ेछीना गांव में व्यतीत हुआ था। इसीलिए उनकी कहानी लेखन में एक बहुत बड़ा दायरा पहाड़ी परिवेश की कहानियों से गिरा है। उनकी पहाड़ी परिवेश को लेकर लिखी गई कहानियां 'बर्फ की चटानें' शीर्षक बृहदकाय संकलन में संग्रहित हैं। यहां उनकी प्रमुख कहानियां जैसे पोस्टमैन, वह तू ही था, आन–बान, लीक, भंवरे की जात, लोक देवता, बर्फ की चट्टानें, चिट्ठी के चार अक्षर, उसने तो नहीं कहा था, सीने में धंसी आवाज, बिना पूछँ के हनुमान, बाली सुग्रीव, दशरथ, सतजुगिया आदमी, घर गृहस्थी, कुसुमी, नंगा, सावित्री, गोपुली गफूरन, कालिका अवतार, अंतिम तृष्णा, वीरखम्मा, आकाश कितना अनंत है, पुरखा, काला कौआ, झुरमुट, एक शब्दहीन नदी, भेड़ें और गड़रिये, नेताजी की चुटिया, ऋण, मेरा एकलव्य, खरबूजा, बित्ता भर सुख, रहमतुल्ला, जिबूका, संस्कार, कपिला,भस्मासुर, रुका हुआ रास्ता, मिसेज ग्रीन वुड, चुनाव, पापमुक्ति, लाटी, पुरोहित, प्रेत मुक्ति, सुहागिनी, उत्तरापथ, असमर्थ दो दुःखों का एक सुख, हलाल, घुघुतिया त्यौहार, छाक, इतिहास तथा अर्द्धांगिनी आदि की चर्चा करेंगे जो विशेषतः नारी केंद्रित हैं।

मूल शब्दः – बृहदकाय, मिरासन, निर्दयतापूर्वक, निमोनिया, नौली, दरिद्रता, छोरमूल्या, दकियानूसी, मीन मैंटलिटी, उहापोह

विषय प्रवेश –

भंवरे की रातः भंवरे की रात : इस कहानी में पुरुष की भ्रमर–वृत्ति का वर्णन है। इस कहानी में पहाड़ी स्त्रियों के दुःख दर्द को लेखक ने मानोवैज्ञानिक ढंग और मानवीय स्पर्श के साथ प्रस्तुत किया है। इस कहानी में चार नारी पात्र हैं– चिणकुली मिरासन, उसकी बेटी कुंतली उर्फ कीड़ी हुडक्यानी, रुक्मी और उसकी मां । रामसिंह हवलदार कश्मीर की युद्धबन्दी के बाद फौज से रिलीज होकर घर लौटता है। वह अल्मोड़ा और रानीखेत के बीच ठेके पर ट्रक चलाने लगता है। पत्नी रुक्मी को उसने लतिया कर घर से निकाल दिया था। वह अपने मैके कापली गॉव जा बैठी थी। इसी बीच में रामसिंह का दिल कुंतली पर आ जाता है। कुंतली मिरासन नाचने गाने का काम करती थी, परन्तु अंग्रेजी सरकार के जाने के बाद उसके धंधे में ऐसी चोट आयी कि अब उसे शरीर का व्यवसाय करना पड़ता है। ऐसे में उसे रामसिंह मिलता है। रामसिंह उसे अपनी पत्नी की तरह रखता है और सारी कमाई उसके हाथों में रखने लगता है। रुक्मी की माँ को जब इस बात का पता चलता है तो वह कुंतली के पास आती है, पर कुंतली की मां चिणकुली उसे निर्दयतापूर्वक घर से निकाल देती है। समय का चक्कर कुछ ऐसा चलता है कि जाति–बाहर होने के डर से रामसिंह कुतंली को छोड़कर रुक्मी के साथ रहने लगता है। कुंतली के आकर्षण से बचने के लिए वह इस रास्ते को ही छोड़ देता है। मां चिणकुली के कहने पर कुंतली एक दिन कांपली पहुंचती है। रुक्मी को देखकर उसका मन बदल जाता है। वह कहती है – 'मैं तो नाच गाकर भी जिन्दगी ठेल लूँगी, लेकिन तुम कहाँ तक मायके में पड़ी रहोगी। मैंने अपना दावा तुम्हारे लिए छोड़ा। लेखक पहाड़ी स्त्रियों की वास्तविक स्थिति का परिचय इस कहानी में देना चाहता है।

कुसुमी : प्रस्तुत कहानी में पहाड़ी जीवन का एक दूसरा आयाम प्रस्तुत होता है। पहाड़ों में छोटी और मध्यवर्गीय जातियों में यदि कोई स्त्री विधवा होती है तो देवर के साथ उसका पुनर्विवाह करवा दिया जाता है। कुसुमी एक ऐसी ही विधवा स्त्री है। उसका पति निमोनिया बुखार से मर गया था। सास ससुर कुसुमी को बहुत चाहते थे। खेती बाड़ी का सारा काम कुसुमी ही संभालती थी। ऊपर से सास ससुर की सेवा भी करती थी। ससुर मधन सिंह ऐसी लक्ष्मी सी बहू को खोना नहीं चाहते थे। अतः वे उसके देवर केसरी सिंह से विवाह करा देने की सोचते हैं। केसर सिंह भी इस बात को समझता है पर उसके भीतर का संकोच जल्दी दूर नहीं होता है। अन्ततः देवर ही कुसुमी की ओर खिंचा चला जाता है और अपनी भौजी का हाथ थाम लेता है। कहानीकार पहाड़ों में व्याप्त इस समस्या का सामाजिक, आर्थिक पक्ष इस कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहता है।

अंतिम तृष्णा : प्रस्तुत कहानी में मटियानी जी ने पहाड़ी औरतों के दुःख दर्द को समेट कर रख दिया है। रतन सिंह लछिमा को बहुत प्यार करता है। पहाड़ के किसानों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन है। पशुओं की संख्या बढ़ती जाती है। भैंस के पीछे नौली कहावत इन लोगों पर खरी उतरती है। पहाड़ में नयी नवेली बहू कहती है 'नौकर काम कायदे से नहीं करते। नौकर मन लगाकर काम नहीं करेगा और दूसरे उसे नकद तनखा देनी पड़ती है। नौकर की जगह 'नौली' लाने में फायदा रहता है।' रतनसिंह लछिमा को बहुत प्यार करता था। लछिमा के न कहने पर भी वह कसम खाता है कि वह कभी नौली नहीं लायेगा। प्रसूति के समय लछिमा बीमार हो जाती है। रतनसिंह नौली ले आता है। ऐसे में लछिमा खाट पकड़ लेती है। बीमारी नहीं, उसे उसके पति का विश्वासघात खा जाता है। नई नौली रेवती समझदार है। वह लछिमा की सेवा करती है। रतनसिंह के मन में एक अपराध बोध पनपने लगता है। इसी बीच लछिमा उससे कुछ नहीं बोलती है और यही उसे अखरता है। वह चाहता है कि लछिमा उसे

बोले और उसे कोसे, गालियाँ दे। अपने अपराध बोध के मारे वह शराब पीने लगता है। लछिमा का अंतिम समय आ जाता है। रतनसिंह उसके लिए बरफी लाता है। अचानक ही कुछ चमत्कार सा हो जाता है। मरती सी लछिमा में कम्पन सा हुआ और उसने काँपते हाथों से टुकड़ा बर्फी का उठा लिया बायें हाथ से रतन सिंह के आँसू पोंछ कर दायें हाथ से बरफी का टुकड़ा उसके मुँह में भरते हुए, धीमी अवाज में बोलती है–"तुम, तुम शराब पीना छोड़ देना, हो।"" मानवीय संबंधों और नारी चेतना के आयामों को प्रस्तुत करने वाली यह कहानी मनोविज्ञान की दृष्टि से उल्लेखनीय है। सौत का होना स्त्री के लिए सबसे बड़ा दुख होता है। लक्षिमा को भी यही दुख है, किन्तु नौली इस भ्रम को दूर कर देती है।

काला कौवा : इस कहानी में पहाड़ी जीवन का एक नया स्वरूप चित्रित हुआ है। पहाड़ों में दरिद्रता कोई नई बात नहीं होती है। तराई के लोग रुपये देकर लड़कियों से विवाह कर लेते हैं। जो लोग दुहाजू और तिहाजू होते हैं, जिन्हें जात बिरादरी की कन्या नहीं मिलती है, वे पहाड़ की गरीब और गरजमन्द लोगों को रुपये देकर फंसा लेते हैं। कुंती बिना मां बाप की लड़की है। चाचा चतुरीसिंह तथा चाची लक्ष्मी के सहारे वह जैसे तैसे अपने दिन काट रही है। लक्ष्मी चतुरी सिंह से कहती है पहाड़ में ब्याहेगें तो चार भांड़े गांठ के लगाने पड़ेंगे। देसियों को दे देंगे तो वे अपना खर्च लगाकर डोली उठा ले जायेंगे। सात आठ सौ की चोखी रकम ऊपर से मिलेगी, सो अलग। घर से ऋण की पोटली खिसकेगी, लक्ष्मी मैया आयेगी। कुंती को अपने 'छोरमूल्या' भाई की चिन्ता है। वह उसे अपने साथ तराई ले जाना चाहती है। मोहकम सिंह विवाह के लिए हामी भर देता है। कुंती की सास परमेसरी रात–दिन दूसरों के ताने सुनाती रहती है। इसी बीच कुंती का पति गोपिया एक दिन घर से भाग जाता है। पूरी कहानी नारी शोषण का सटीक उदाहरण बन जाती है। पहाड़ में इस तरह कथात्मक अनुभव बहुधा होते हैं।

झुरमुट : प्रस्तुत कहानी में पहाड़ों में धर्म परिवर्तन करने वाले ब्राह्मण परिवारों के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा संस्कारगत उहापोह का वर्णन मिलता है। धरणीधर उप्रेती सुप्रिया मसी के रूपाकर्षण में फंसकर, तारा पंडितानी को छोड़कर, अपना धर्म परिवर्तित कर डी. डी. मसी बन जाता है। कुछ समय बाद उसके ब्राह्मण संस्कार जोर मारते हैं और उसे अनुभव होने लगता कि वह सुप्रिया मसी का 'गोल्डन पैरेट' बन गया है। सुप्रिया का घर एक पिंजरा बन कर रह गया है। सुप्रिया कहती है– 'कभी तुमने इसी बात पर अपनी वाइफ को छोड़ दिया था। तुम्हारे लिए वह निहायत बैकवर्ड और दयिकानूसी औरत थी। तुम्हें 'डीपली लव' नहीं करती थी। तुम्हें आमलेट बनाकर नहीं देती थी, तुम्हारे साथ घूमने नहीं जाती थी। अपने हिन्दू धर्म को तुम 'हेट' करते हो क्योंकि तुम्हारी बिरादरी वाले दकियानूसी और पिछड़े हुए और 'मीन मैंटलिटी' वाले होते हैं। मुझे लगता है, वह सब तुम्हारा दिखावा ही था। तुम्हारा उद्देश्य तो जैसे–तैसे मुझे 'कनविंस' करके 'लस्ट' पूरा करना था। 34 धरणीधर उप्रैती एक साथ दो स्त्रियों की जिन्दगी में विष घोल देते हैं। उनका जीवन त्रिशुंक सा हो जाता है। तारा और सुप्रिया के रूप में लेखक ने ऐसे नारी पात्रों को चित्रित किया है जो अपने शिक्षक से विवाह कर लेती हैं। धर्म परिवर्तन से प्रभावित पहाड़ी परविारों, विशेषकर नारी पात्रों की मानसिकता का चित्रण इस कहानी में प्रभावी तौर पर मिलता है।

एक शब्दहीन नदी : इस कहानी में हंसा नामक एक पहाड़ी युवती का चित्रण किया गया है। हंसा का विवाह शंकर सिंह से हुआ है। विवाह के तीसरे महीने में ही शंकर सिंह घर से निकल जाता है। पहाड़ की खेती से दो छोटे भाई, विधवा मां तथा हंसा का पालन पोषण संभव नहीं था। वह हंसा को नये फैशन के कपड़े देना चाहता है। इन सब इच्छाओं की पूर्ति के लिए वह शहर जाता है। दिल्ली में वह चौकीदारी कर लेता है। चौकीदारी करते करते वह हंसा को प्रेमपत्र लिखता है, जिसमें शहर के सुनहरे सपने का वर्णन होता है। कुछ समय बाद वह छुट्टी लेकर गांव आने पर, दिखावे के लिए तमाम अनावश्क खर्चे करता है। हंसा को दिल्ली ले जाने की इच्छा होते हुए भी उसका पति इस स्थिति में नहीं है कि पत्नी को दिल्ली ले जा सके। छुट्टी पूरी होते ही वह हंसा को उसके पिता के घर भेज देता है और फिर खुद दिल्ली लौट जाता है। लेखक के अनुसार – अपनी औकात से बाहर सपनों के ब्यामोह में शंकर सिंह उसे छोड़ देता है।

रुका हुआ रास्ता : इस कहानी में पहाड़ी नारी की पीड़ा के एक नया आयाम देते हुए लेखक ने चित्रित किया है। गोमती का पति पलटन में मर चुका है। साल भर बाद गोमती खीम सिंह की 'नौली' बन जाती है। खीम सिंह और गोमती में पहले भी प्यार था। खीम सिंह को लकवा मार जाता है। वह चलने फिरने में अपाहिज हो चुका है। गोमती खीमसिंह की तन मन से सेवा करती है। बीमारी के कारण खीम सिंह का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। बात बात में वह गोमती को लताड़ता रहता है। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए किसन सिंह गोमती को अपने घर आने के लिए कहता है। किसन सिंह की पत्नी गागुंली गुलबिया सिपाही के साथ भाग गयी थी। एक बार तो गोमती तैयार हो जाती है और पिछवाडे से निकल कर किसन सिंह के घर चली आती है। खीम सिंह की लाचारी का विचार आते ही उसकी अंतरात्मा जाग उठती है और पुनः अपने घर लौट आती है। हृदय परिवर्तन का चित्रण करना इस कहानी का उद्देश्य है।

इतिहास : कहानी के प्रमुख पात्र उप्रैती साहब जीवन भर बड़े शहरों में रहे हैं। मूलतः पहाड़ी होने के कारण, अपने 'पितर–थान' का मोह उन्हें पहाड़ की ओर खींच लाता है। प्रस्तुत कहानी में पहाड़ी नारी के अनेकों चरित्र स्मृति के माध्यम से आते हैं। उप्रैती साहब की धर्मपत्नी का नाम मांडवी है, जिसे वे 'पुष्पेन्द्र की इजा' कहते हैं। गुड्डुन उप्रैती साहब की पोती है। एक बुढ़िया 'पुंतुलि आमा' का भी जिक्र कहानी में आता है। इस कहानी के नारी चरित्र बहुत प्रभावित करते हैं। उनका स्वरूप मानवीय और प्रभावित करने वाला है।

निष्कर्षतः मटियानी जी का अधिकतम जीवन पहाड़ों में ही व्यतीत हुआ था। इसलिए वह पहाड़ी क्षेत्र की सभ्यता और संस्कृति से भली भांति परिचित थे। यही कारण है कि उन्होंने पहाड़ों में रहने वाली स्त्रियों के जीवन का बहुत मार्मिक एवं सजीव चित्रण किया है। मानवीय संबंधों और नारी चेतना के आयामों को प्रस्तुत करने वाली यह पहाड़ी कहानियां मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। पहाड़ी स्त्रियों के दुख दर्द को लेखक ने मनोवैज्ञानिक ढंग और मानवीय स्पर्श के साथ प्रस्तुत किया है।

संदर्भ – ग्रंथ सूची :

- बर्फ की चट्टानें : शैलेश मटियानी : भूमिका : पृ. 13
- वह तू ही था : शैलेश मटियानी : पृ. 28
- भंवरे की जात : शैलेश मटियानी, पृ. 57दृ58
- उसने तो नहीं कहा था : शैलेश मटियानी पृ. 88
- अंतिम तृष्णा : शैलेश मटियानी, पृ. 208
- एक शब्दहीन नदी : शैलेश मटियानी, पृ. 261
- झुरमुट : शैलेश मटियानी, पृ. 252

- काला कौआ : शैलेश मटियानी 24
- बर्फ की चट्टानें : शैलेश मटियानी पृ. 711

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation